SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

ब्लूम टैक्सनॉमी के आधार पर शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण और उसका शिक्षण–प्रशिक्षण में महत्व

शशि कुमारी तिर्की, पी–एचडी., शिक्षा विभाग
गोड्डा महाविद्यालय, गोड्डा, झारखण्ड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
शशि कुमारी तिर्की, पी.–एचडी.
E-mail : shashitirkey81@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 12/07/2025
Revised on : 11/09/2025
Accepted on : 20/09/2025
Overall Similarity : 00% on 12/09/2025

शोध सार

शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि शिक्षार्थी के व्यक्तित्व का समग्र विकास करना है। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए शैक्षिक उद्देश्यों का व्यवस्थित वर्गीकरण अत्यंत आवश्यक है। इसी संदर्भ में 1956 में बेंजामिन ब्लूम एवं उनकी टीम ने शैक्षिक उद्देश्यों के वर्गीकरण का एक ढाँचा प्रस्तुत किया, जिसे ब्लूम टैक्सनॉमी कहा जाता है। यह टैक्सनॉमी शिक्षा के उद्देश्यों को तीन मुख्य क्षेत्रों में विभाजित करती है। संज्ञानात्मक, भावात्मक और मनोचालित। संज्ञानात्मक क्षेत्र में ज्ञान, समझ, अनुप्रयोग, विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन जैसी मानसिक क्षमताओं को शामिल किया गया है। भावात्मक क्षेत्र में रुचि, दृष्टिकोण, मूल्य और संवेदनशीलता का विकास आता है, जबकि मनोचालित क्षेत्र कौशल, क्रियाओं और शारीरिक दक्षताओं के अधिग्रहण से संबंधित है। इस प्रकार ब्लूम टैक्सनॉमी शिक्षार्थी के मानसिक, भावनात्मक और क्रियात्मक तीनों आयामों को संतुलित रूप से विकसित करने का मार्ग प्रदान करती है। शिक्षण–प्रशिक्षण की दृष्टि से ब्लूम टैक्सनॉमी का महत्व अत्यधिक है। सबसे पहले, यह शिक्षकों को स्पष्ट एवं क्रमबद्ध शिक्षण उद्देश्यों को निर्धारित करने में सहायता करती है। इससे शिक्षण योजनाएँ अधिक उद्देश्यपूर्ण और व्यवस्थित बन पाती हैं। दूसरा, यह शिक्षार्थियों की विभिन्न क्षमताओं के स्तर को पहचानने और उनके अनुसार उपयुक्त गतिविधियाँ, पद्धतियाँ एवं अधिगम सामग्री चयनित करने में सहायक होती है। तीसरा, यह मूल्यांकन की प्रक्रिया को भी अधिक वस्तुनिष्ठ और वैज्ञानिक बनाती है, क्योंकि परीक्षा प्रश्नों को संज्ञानात्मक, भावात्मक और मनोचालित स्तरों के आधार पर व्यवस्थित किया जा सकता है। वर्तमान शिक्षा परिदृश्य में, जहाँ नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 कौशल–आधारित, अनुभवात्मक एवं

बहुआयामी शिक्षा पर बल देती है, वहाँ ब्लूम टैक्सनॉमी और भी प्रासंगिक हो जाती है। यह न केवल शिक्षण की गुणवत्ता बढ़ाने में मदद करती है, बल्कि शिक्षार्थियों में रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच और समस्या–समाधान की क्षमता भी विकसित करती है। निष्कर्षतः, ब्लूम टैक्सनॉमी केवल शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण मात्र नहीं है, बल्कि यह शिक्षण–प्रशिक्षण की संपूर्ण प्रक्रिया को दिशा देने वाला एक प्रभावी उपकरण है। यह शिक्षा को ज्ञान–केन्द्रित दृष्टिकोण से हटाकर कौशल एवं मूल्य–केन्द्रित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अतः शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों और विद्यालयों में इसके व्यवस्थित प्रयोग की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है।

मुख्य शब्द

संज्ञानात्मक, भावात्मक, क्रियात्मक, टैक्सनॉमी, रचनात्मकता, ब्लूम टैक्सनॉमी.

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन का वह माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्ति केवल ज्ञानार्जन ही नहीं करता बल्कि अपनी व्यक्तित्वगत क्षमताओं का भी विकास करता है। शिक्षा का उद्देश्य केवल पुस्तक–आधारित जानकारी देना या तथ्यों का संकलन करना नहीं है, बल्कि व्यक्ति को इस योग्य बनाना है कि वह जीवन की वास्तविक समस्याओं का समाधान कर सके, समाज में रचनात्मक योगदान दे सके और एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में अपनी भूमिका निभा सके। इस दृष्टि से शिक्षा के उद्देश्यों का स्पष्ट निर्धारण और उनका वैज्ञानिक वर्गीकरण अत्यंत आवश्यक हो जाता है। जब तक शिक्षक यह नहीं जानते कि उनका शिक्षण विद्यार्थियों को कहाँ ले जाना चाहता है, तब तक शिक्षण प्रक्रिया लक्ष्यहीन और प्रभावहीन बनी रहती है।

इसी संदर्भ में अमेरिकी मनोवैज्ञानिक डॉ. बेंजामिन ब्लूम (Benjamin Bloom) और उनके सहयोगियों ने 1956 में शैक्षिक उद्देश्यों के वर्गीकरण का एक संगठित ढाँचा प्रस्तुत किया, जिसे ब्लूम टैक्सनॉमी (Bloom's Taxonomy of Educational Objectives) कहा गया। "Taxonomy" का अर्थ है "वर्गीकरण की प्रणाली"। ब्लूम और उनकी टीम ने शिक्षा के उद्देश्यों को क्रमबद्ध ढंग से विभाजित करके यह स्पष्ट किया कि शिक्षा केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि इसमें भावनात्मक और कौशलगत विकास भी समान रूप से आवश्यक है।

ब्लूम टैक्सनॉमी शिक्षा के उद्देश्यों को तीन मुख्य क्षेत्रों में बाँटती है:

1. **संज्ञानात्मक क्षेत्र (Cognitive Domain):** यह ज्ञान और मानसिक क्षमताओं से संबंधित है। इसमें स्मृति, समझ, अनुप्रयोग, विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन जैसी क्षमताएँ सम्मिलित हैं।
2. **भावात्मक क्षेत्र (Affective Domain):** यह दृष्टिकोण, मूल्य, भावनाएँ और संवेदनशीलता से जुड़ा है। इसमें रुचि, सहयोग, मूल्य ग्रहणशीलता और जीवन दृष्टि का विकास सम्मिलित है।
3. **मनोचालित क्षेत्र (Psychomotor Domain):** यह क्रियात्मक और व्यावहारिक कौशल से संबंधित है। इसमें शारीरिक दक्षता, व्यवहारिक अभ्यास, प्रयोगात्मक कार्य और हाथों–हाथ सीखने की क्षमता शामिल है।

इन तीनों क्षेत्रों को मिलाकर शिक्षा के समग्र उद्देश्य पूरे होते हैं। यदि केवल संज्ञानात्मक पक्ष पर ध्यान दिया जाए तो शिक्षा अधूरी रह जाएगी। इसी प्रकार यदि भावात्मक और मनोचालित पक्ष की उपेक्षा की जाए तो विद्यार्थी केवल रटंत ज्ञान अर्जित कर पाएगा, लेकिन उसमें जीवनोपयोगी दृष्टिकोण और कौशल विकसित नहीं होंगे।

शिक्षण प्रक्रिया का मुख्य आधार यह है कि शिक्षक अपने विद्यार्थियों को किस स्तर तक और किस प्रकार का अधिगम कराना चाहता है। यदि शिक्षक को यह स्पष्ट न हो कि उसका लक्ष्य केवल तथ्यों को याद कराना है या विद्यार्थियों को उनका प्रयोग करना भी सिखाना है, तो शिक्षण की गुणवत्ता प्रभावित होगी। ब्लूम टैक्सनॉमी इस समस्या का समाधान प्रस्तुत करती है। यह शिक्षकों को यह सोचने के लिए प्रेरित करती है कि शिक्षा केवल जानकारी प्रदान करने का साधन नहीं, बल्कि आलोचनात्मक सोच, समस्या–समाधान और रचनात्मकता को विकसित करने का माध्यम है।

आज की शिक्षा में यह और भी प्रासंगिक है क्योंकि शिक्षा का स्वरूप बदल रहा है। अब शिक्षा केवल

परीक्षा–उन्मुख न होकर जीवन–उन्मुख और कौशल–आधारित बन रही है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) भी इसी बात पर बल देती है कि विद्यार्थी को केवल अंकों के लिए पढ़ाया न जाए, बल्कि उसमें आलोचनात्मक चिंतन, संवाद क्षमता, मूल्य–बोध और व्यवहारिक कौशल विकसित किए जाएँ। ब्लूम टैक्सनॉमी इन सभी उद्देश्यों को स्पष्ट दिशा देती है।

21वीं सदी का समाज विज्ञान और तकनीक की तीव्र प्रगति के साथ निरंतर बदल रहा है। ऐसे समाज में केवल जानकारी याद कर लेना पर्याप्त नहीं है। विद्यार्थियों को नई परिस्थितियों में अनुकूलन करने, समस्याओं का समाधान खोजने और नवाचार करने की आवश्यकता होती है। इसके लिए शिक्षा में रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच, सहयोग, संचार कौशल और जीवन मूल्यों का विकास अनिवार्य है।

ब्लूम टैक्सनॉमी इस दिशा में एक ठोस आधार प्रदान करती है। यह शिक्षा को केवल ''ज्ञान के हस्तांतरण'' से आगे बढ़ाकर ''ज्ञान के निर्माण'' की प्रक्रिया में परिवर्तित करती है। यही कारण है कि आधुनिक शिक्षण संस्थानों, शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों और पाठ्यचर्या निर्माण में ब्लूम टैक्सनॉमी को आधारभूत तत्व के रूप में अपनाया गया है।

अतः ब्लूम टैक्सनॉमी को केवल एक ''वर्गीकरण प्रणाली'' मानकर सीमित नहीं किया जा सकता। वास्तव में यह एक शैक्षिक दर्शन है जो शिक्षा को ज्ञान, भावनाओं और कौशल तीनों आयामों में संतुलित बनाता है और शिक्षण–प्रशिक्षण की गुणवत्ता को नई ऊँचाई प्रदान करता।

शोध उद्देश्य

इस शोध का उद्देश्य ब्लूम टैक्सनॉमी के आधार पर शैक्षिक उद्देश्यों के वर्गीकरण को स्पष्ट करना और उसके शिक्षण–प्रशिक्षण में महत्व का विश्लेषण करना है। ब्लूम टैक्सनॉमी ज्ञान, बौद्धिक कौशल, भावात्मक पक्ष और मनोदैहिक कौशल को क्रमिक रूप में प्रस्तुत करती है, जिससे शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को सुव्यवस्थित किया जा सकता है। इस शोध के माध्यम से यह अध्ययन करना है कि शिक्षक किस प्रकार इस वर्गीकरण के आधार पर शिक्षण उद्देश्यों का निर्धारण करें, जिससे विद्यार्थियों में स्मरण, समझ, अनुप्रयोग, विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन जैसी क्षमताओं का विकास हो सके। शोध का एक अन्य उद्देश्य यह जानना है कि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में ब्लूम टैक्सनॉमी की अवधारणा को व्यावहारिक रूप में कैसे लागू किया जाए, ताकि शिक्षक शिक्षण योजना निर्माण, उपयुक्त विधि चयन तथा निष्पक्ष मूल्यांकन कर सकें। इस प्रकार यह शोध शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार, विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास तथा शिक्षक की पेशेवर दक्षता बढ़ाने की दिशा में सहायक सिद्ध होगा।

शोध विधि

शोधार्थी ने इस शोध विधि में विश्लेषणात्मक व्याख्या की है, इसके लिए द्वितीयक स्रोतों का सहारा लिया गया है साथ ही प्रकाशित ग्रंथ, विभिन्न पत्र– पत्रिकाओं में छपे लेख, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध – कार्य एवं इंटरनेट का सहारा लिया गया है।

शोध विश्लेषण

शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी प्रदान करना नहीं, बल्कि मानव व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है। यदि शिक्षा केवल तथ्यों को याद कराने तक सीमित रह जाए तो वह अधूरी मानी जाएगी। शिक्षा का सही लक्ष्य यह है कि शिक्षार्थी ज्ञान अर्जन के साथ–साथ उसका प्रयोग करे, आलोचनात्मक चिंतन करे, मूल्यबोध और सामाजिक उत्तरदायित्व को समझे तथा जीवन के विविध क्षेत्रों में सफलता प्राप्त कर सके।

इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए शिक्षा विज्ञान में शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण आवश्यक समझा गया। इस क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण योगदान बेंजामिन ब्लूम और उनके सहयोगियों (1956) का है, जिन्होंने शैक्षिक उद्देश्यों का एक वैज्ञानिक वर्गीकरण प्रस्तुत किया, जिसे आज ब्लूम टैक्सनॉमी के नाम से जाना जाता है।

ब्लूम टैक्सनॉमी शिक्षा के उद्देश्यों को तीन प्रमुख क्षेत्रों में विभाजित करती है संज्ञानात्मक (Cognitive), भावात्मक (Affective) और मनोचालित (Psychomotor)। यह वर्गीकरण शिक्षा को अधिक स्पष्ट, उद्देश्यपूर्ण और व्यवस्थित बनाने में सहायक सिद्ध हुआ।

1950 के दशक में शिक्षण और अधिगम पर गहन शोध कार्य चल रहा था। उस समय शिक्षकों और शिक्षाविदों को यह समस्या थी कि शैक्षिक उद्देश्यों को किस प्रकार परिभाषित और वर्गीकृत किया जाए। अक्सर शिक्षक केवल ''ज्ञान देना'' या ''जानकारी प्रदान करना'' ही उद्देश्य मानते थे। इस सीमित दृष्टिकोण को बदलने और शिक्षा को व्यापक परिप्रेक्ष्य देने के लिए ब्लूम और उनकी टीम ने टैक्सनॉमी ऑफ एजुकेशनल ऑब्जेक्टिव्स प्रस्तुत किया।

इसका प्रथम खंड संज्ञानात्मक क्षेत्र (1956) से संबंधित था, जबकि भावात्मक क्षेत्र (1964) और मनोचालित क्षेत्र (1972 सिम्पसन, हैरो आदि द्वारा) बाद में विकसित किए गए। ब्लूम टैक्सनॉमी ने शिक्षा जगत को यह स्पष्ट किया कि शिक्षा केवल ज्ञान–प्रदान नहीं है, बल्कि इसमें ज्ञान, दृष्टिकोण और कौशल तीनों का समावेश होना चाहिए।

शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण: ब्लूम टैक्सनॉमी

अ. संज्ञानात्मक क्षेत्र (Cognitive Domain)

ब. भावात्मक पक्ष (Affective Domain)

स. क्रियात्मक पक्ष (Psychomotor Domain)

अ. संज्ञानात्मक क्षेत्र (Cognitive Domain)

ब्लूम टैक्सनॉमी का सबसे महत्वपूर्ण और विस्तृत भाग संज्ञानात्मक पक्ष है। यह क्षेत्र व्यक्ति की बौद्धिक क्षमताओं, ज्ञान की प्राप्ति, उसकी समझ, विश्लेषण और प्रयोग करने की क्षमता से संबंधित है। शिक्षा का पारंपरिक दृष्टिकोण भी प्रायः संज्ञानात्मक क्षेत्र पर केंद्रित रहा है, क्योंकि शिक्षा के माध्यम से सर्वप्रथम ज्ञान का अर्जन और बौद्धिक विकास ही अपेक्षित होता है।

ब्लूम और उनकी टीम ने संज्ञानात्मक उद्देश्यों को छह स्तरों में वर्गीकृत किया, जिन्हें सरल से जटिल क्रम में व्यवस्थित किया गया। इससे शिक्षा में सीखने की प्रक्रिया को क्रमबद्ध और वैज्ञानिक रूप देने में सहायता मिली।

संज्ञानात्मक पक्ष के स्तर

ज्ञान

- **अर्थः** तथ्यों, शब्दों, परिभाषाओं, नियमों और सिद्धांतों को याद रखना या स्मरण करना।
- **उदाहरणः** छात्र भारत की स्वतंत्रता की तिथि बता सके, किसी सूत्र को लिख सके या किसी घटना के तथ्य दोहरा सके।
- **शिक्षण गतिविधिः** रटंत पद्धति, प्रश्नोत्तर, मौखिक–लिखित परीक्षा।
- **महत्वः** यह संज्ञानात्मक विकास का प्रथम आधार है क्योंकि बिना तथ्यात्मक ज्ञान के अन्य उच्च स्तर संभव नहीं।

समझ

- **अर्थः** अर्जित ज्ञान को अपने शब्दों में समझना, उसका अर्थ स्पष्ट करना या व्याख्या करना।
- **उदाहरणः** छात्र समझा सके कि स्वतंत्रता आंदोलन क्यों शुरू हुआ, किसी गणितीय सूत्र का तात्पर्य बता सके।
- **शिक्षण गतिविधिः** व्याख्या, सारांश लेखन, पुनः कथन, चित्रात्मक प्रस्तुति।
- **महत्वः** यह स्तर विद्यार्थियों को केवल रटंत ज्ञान से आगे ले जाकर ज्ञान की वास्तविक समझ विकसित करता है।

अनुप्रयोग

- **अर्थः** अर्जित ज्ञान का नई परिस्थितियों और समस्याओं में प्रयोग करना।
- **उदाहरणः** छात्र गणित का सूत्र वास्तविक जीवन की समस्या हल करने में लगाए, या ऐतिहासिक सिद्धांत का प्रयोग वर्तमान घटनाओं के विश्लेषण में करे।
- **शिक्षण गतिविधिः** अभ्यास प्रश्न, परियोजना कार्य, प्रयोगात्मक गतिविधियाँ।

- **महत्वः** यह स्तर विद्यार्थियों को ''ज्ञान का उपयोग'' करना सिखाता है, जिससे शिक्षा व्यवहारिक बनती है।

विश्लेषण

- **अर्थः** किसी विषय को छोटे–छोटे घटकों में विभाजित करना और उनके संबंधों को समझना।
- **उदाहरणः** छात्र किसी साहित्यिक रचना का विश्लेषण करे, किसी सामाजिक समस्या के कारण और प्रभाव अलग–अलग बताए।
- **शिक्षण गतिविधिः** तुलनात्मक अध्ययन, केस स्टडी, वाद–विवाद।
- **महत्वः** यह स्तर आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking) विकसित करता है।

संश्लेषण

- **अर्थः** विभिन्न तथ्यों और विचारों को मिलाकर एक नई रचना या संरचना तैयार करना।
- **उदाहरणः** छात्र नया निबंध लिखे, परियोजना तैयार करे, या वैज्ञानिक प्रयोग से नया निष्कर्ष निकाले।
- **शिक्षण गतिविधिः** सृजनात्मक लेखन, परियोजना निर्माण, मॉडल बनाना।
- **महत्वः** यह स्तर विद्यार्थियों की रचनात्मकता और नवोन्मेष को प्रोत्साहित करता है।

मूल्यांकन

- **अर्थः** किसी विचार, सिद्धांत या कार्य का तार्किक आधार पर मूल्यांकन करना और निर्णय देना।
- उदाहरणः छात्र किसी ऐतिहासिक घटना की सफलता–विफलता का मूल्यांकन करे, किसी नीति की उपयोगिता पर निर्णय दे।
- **शिक्षण गतिविधिः** समीक्षा लेखन, आलोचनात्मक निबंध, पैनल चर्चा।
- **महत्वः** यह स्तर उच्च स्तरीय बौद्धिक क्षमता और निर्णय शक्ति विकसित करता है।

एंडरसन और क्रैथवॉल द्वारा संशोधित संज्ञानात्मक पक्ष (2001) ब्लूम की मूल टैक्सनॉमी को 2001 में एंडरसन और क्रैथवॉल ने पुनर्गठित किया। उन्होंने स्तरों को इस प्रकार रखाः

1. स्मरण।
2. समझना।
3. लागू करना।
4. विश्लेषण करना।
5. मूल्यांकन करना।
6. सृजन करना।

नए संस्करण में सृजन (Create) को सर्वोच्च स्तर माना गया और ''संश्लेषण'' को इसी में सम्मिलित किया गया।

शिक्षण–प्रशिक्षण में संज्ञानात्मक पक्ष का महत्व

1. **उद्देश्य निर्धारण में मार्गदर्शनः** शिक्षक यह तय कर सकता है कि वह विद्यार्थियों को किस स्तर तक ले जाना चाहता है।
2. **पाठ योजना निर्माणः** ब्लूम टैक्सनॉमी के संज्ञानात्मक स्तरों के आधार पर शिक्षक क्रमबद्ध पाठ योजना बना सकता है।
3. **शिक्षण विधियों का चयनः** प्रत्येक स्तर के लिए अलग विधि उपयुक्त होती है। जैसे ज्ञान के लिए व्याख्यान, अनुप्रयोग के लिए प्रयोग, और मूल्यांकन के लिए चर्चा।
4. **मूल्यांकन प्रक्रियाः** प्रश्नपत्र बनाते समय विभिन्न स्तरों को शामिल किया जा सकता है, जिससे परीक्षा केवल रटंत ज्ञान तक सीमित न रहे।

5. **आलोचनात्मक सोच और सृजनशीलता का विकास:** संज्ञानात्मक पक्ष विद्यार्थियों में तार्किक विश्लेषण और रचनात्मकता को बढ़ावा देता है।

आधुनिक संदर्भ में संज्ञानात्मक पक्ष की प्रासंगिकता

आज के डिजिटल युग में केवल जानकारी अर्जित करना पर्याप्त नहीं है क्योंकि जानकारी इंटरनेट पर सहज उपलब्ध है। आवश्यकता है कि विद्यार्थी जानकारी का विश्लेषण करें, उसका उपयोग करें और नए विचार उत्पन्न करें।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) भी इसी पर बल देती है कि शिक्षा केवल तथ्यों तक सीमित न हो, बल्कि आलोचनात्मक चिंतन, समस्या–समाधान और नवाचार पर आधारित हो। यह सभी लक्ष्य संज्ञानात्मक पक्ष के माध्यम से ही पूरे किए जा सकते हैं।

संज्ञानात्मक पक्ष ब्लूम टैक्सनॉमी का आधार और सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह शिक्षण को केवल ज्ञान देने की प्रक्रिया न मानकर उसे समझ, प्रयोग, विश्लेषण, सृजन और मूल्यांकन तक ले जाता है।

शिक्षण–प्रशिक्षण की दृष्टि से यह पक्ष इसलिए विशेष है क्योंकि यह विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास को क्रमबद्ध तरीके से सुनिश्चित करता है। आधुनिक शिक्षा, जो कौशल–आधारित और अनुभवात्मक अधिगम पर केंद्रित है, उसमें संज्ञानात्मक पक्ष की प्रासंगिकता और भी अधिक हो गई है।

अतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने और उसे जीवनोपयोगी बनाने में ब्लूम टैक्सनॉमी का संज्ञानात्मक पक्ष अपरिहार्य भूमिका निभाता है।

ब. भावात्मक पक्ष

शिक्षा केवल बौद्धिक (संज्ञानात्मक) विकास तक सीमित नहीं है। यह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, मूल्य, दृष्टिकोण और भावनात्मक परिपक्वता को भी आकार देती है। ब्लूम टैक्सनॉमी में ''भावात्मक पक्ष'' उन उद्देश्यों को दर्शाता है जो विद्यार्थियों की भावनाओं, दृष्टिकोण, रुचियों, मूल्यों और चरित्र निर्माण से जुड़े हैं।

इस क्षेत्र का प्रमुख कार्य है:

- विद्यार्थियों में सही मूल्य एवं नैतिकता विकसित करना,
- शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करना,
- समाज व राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी की भावना जागृत करना।

भावात्मक पक्ष की परिभाषा: भावात्मक पक्ष (Affective Domain) वह क्षेत्र है जो शिक्षार्थियों की भावनाओं, रुचियों, दृष्टिकोणों, प्रवृत्तियों, मूल्यों और संवेदनशीलताओं से संबंधित है।

यह विद्यार्थियों को न केवल "क्या सोचना है" बल्कि "कैसे महसूस करना है" और "कैसे व्यवहार करना है" यह सिखाता है।

भावात्मक पक्ष के स्तर

ब्लूम टैक्सनॉमी के अंतर्गत भावात्मक पक्ष को पाँच स्तरों में विभाजित किया गया है। यह क्रम निम्न से उच्च की ओर जाता है:

(i) **ग्रहणशीलता**

- **अर्थ:** विद्यार्थी किसी विचार, तथ्य, मूल्य या अनुभव को ग्रहण करने या सुनने की तैयारी रखता है।
- **उदाहरण:** विद्यार्थी कक्षा में ध्यानपूर्वक शिक्षक की बात सुनता है, किसी सामाजिक समस्या पर चर्चा में रुचि दिखाता है।
- **शिक्षण गतिविधि:** प्रेरणा, कहानी सुनाना, चित्र ध् वीडियो दिखाना।
- **महत्व:** यह स्तर किसी भी भावनात्मक परिवर्तन की प्रथम सीढ़ी है।

(ii) **प्रतिक्रिया**

- **अर्थः** विद्यार्थी न केवल ग्रहण करता है, बल्कि सक्रिय रूप से प्रतिक्रिया भी देता है।
- **उदाहरणः** विद्यार्थी प्रश्न पूछता है, समूह चर्चा में भाग लेता है, सांस्कृतिक गतिविधि में शामिल होता है।
- **शिक्षण गतिविधिः** वाद–विवाद, नाटक, भूमिका–अभिनय, प्रश्नोत्तर।
- **महत्वः** यह स्तर विद्यार्थियों को सक्रिय भागीदारी और सीखने के प्रति उत्साह की ओर ले जाता है।

(iii) **मूल्यांकन**

- **अर्थः** विद्यार्थी किसी मूल्य, सिद्धांत या विचार को स्वीकार करता है और उसे महत्त्व देने लगता है।
- **उदाहरणः** विद्यार्थी सत्य, अहिंसा, सहयोग, अनुशासन जैसी मूल्यों का पालन करता है।
- **शिक्षण गतिविधिः** सेवा कार्य (NSS, NCC), सामुदायिक परियोजनाएँ, नैतिक शिक्षा।
- **महत्वः** यह स्तर चरित्र निर्माण और नैतिक विकास का आधार है।

(iv) **संगठन)**

- **अर्थः** विद्यार्थी विभिन्न मूल्यों और दृष्टिकोणों को समन्वित कर अपने जीवन की आचार–संहिता (Code of conduct) तैयार करता है।
- **उदाहरणः** विद्यार्थी निर्णय लेता है कि वह नशा नहीं करेगा, समानता का समर्थन करेगा, या सत्य का मार्ग अपनाएगा।
- **शिक्षण गतिविधिः** केस स्टडी, समस्याओं पर चर्चा, आत्मचिंतन।
- **महत्वः** यह स्तर व्यक्तित्व को स्थिरता और दिशा प्रदान करता है।

(v) **चरित्रांकन**

- **अर्थः** मूल्य और दृष्टिकोण विद्यार्थी के चरित्र का स्थायी हिस्सा बन जाते हैं।
- **उदाहरणः** गांधीजी का सत्य और अहिंसा के प्रति जीवनपर्यंत समर्पण।
- **शिक्षण गतिविधिः** जीवन कौशल शिक्षा, आदर्श व्यक्तित्व का अध्ययन, आत्म–विश्लेषण।
- **महत्वः** यह स्तर स्थायी नैतिकता, आदर्श आचरण और व्यक्तित्व की परिपक्वता सुनिश्चित करता है।

शिक्षण–प्रशिक्षण में भावात्मक पक्ष का महत्व

1. **चरित्र निर्माणः** शिक्षा का अंतिम लक्ष्य केवल ज्ञान नहीं बल्कि उत्तम चरित्र का निर्माण है। भावात्मक पक्ष इसी को संभव बनाता है।
2. **नैतिक एवं सामाजिक मूल्यः** यह विद्यार्थियों में सत्य, ईमानदारी, सहयोग, करुणा, देशभक्ति जैसे मूल्यों का विकास करता है।
3. **सकारात्मक दृष्टिकोणः** विद्यार्थी शिक्षा, समाज और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाते हैं।
4. **सामाजिक उत्तरदायित्वः** भावात्मक पक्ष विद्यार्थियों को समाज के प्रति जिम्मेदारी निभाने के लिए प्रेरित करता है।
5. **सर्वांगीण विकासः** केवल बौद्धिक नहीं, बल्कि भावनात्मक और नैतिक विकास से ही शिक्षा का समग्र उद्देश्य पूरा होता है।

आधुनिक संदर्भ में भावात्मक पक्ष की प्रासंगिकता

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) भी इस बात पर बल देती है कि शिक्षा केवल अकादमिक उपलब्धियों तक सीमित न रहकर नैतिकता, मूल्य और जीवन कौशल पर आधारित हो।

वर्तमान समाज में भ्रष्टाचार, हिंसा, असहिष्णुता जैसी समस्याओं के समाधान के लिए विद्यार्थियों में भावात्मक पक्ष का विकास आवश्यक है।

डिजिटल युग में जहाँ जानकारी आसानी से उपलब्ध है, वहाँ मानवता, संवेदनशीलता और सहानुभूति को बढ़ाने के लिए भावात्मक शिक्षा की आवश्यकता और भी अधिक हो जाती है।

भावात्मक पक्ष ब्लूम टैक्सनॉमी का वह क्षेत्र है जो शिक्षा को मात्र बौद्धिक उपलब्धियों तक सीमित न रखकर उसे नैतिक, मूल्यपरक और मानवीय आयाम प्रदान करता है।

यह विद्यार्थियों को न केवल जानने और समझने बल्कि महसूस करने और सही मूल्य अपनाने की ओर प्रेरित करता है।

आधुनिक शिक्षण–प्रशिक्षण की सफलता इसी में निहित है कि वह विद्यार्थियों को सत्य, करुणा, सहिष्णुता, सहयोग और जिम्मेदारी जैसे मूल्यों से अतः शिक्षा के उद्देश्यों का यह भावात्मक पक्ष समाज को संस्कारित, नैतिक और उत्तरदायी नागरिक बनाने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

स. क्रियात्मक पक्ष

ब्लूम टैक्सनॉमी शिक्षा के उद्देश्यों को तीन क्षेत्रों में विभाजित करती हैः संज्ञानात्मक (Cognitive), भावात्मक (Affective) और क्रियात्मक या मनोचालित (Psychomotor)।

जहाँ संज्ञानात्मक पक्ष ज्ञान और बौद्धिक विकास पर, भावात्मक पक्ष मूल्य एवं दृष्टिकोण पर केन्द्रित है, वहीं क्रियात्मक पक्ष विद्यार्थियों की शारीरिक क्रियाओं, कौशल, दक्षता और व्यावहारिक कार्यों से संबंधित है।

शिक्षा केवल सोचने और महसूस करने तक सीमित नहीं हैय यह करने की क्षमता भी विकसित करती है। क्रियात्मक पक्ष विद्यार्थियों में हाथों का कौशल, शारीरिक समन्वय, तकनीकी दक्षता और व्यावहारिक कार्यों को संपन्न करने की योग्यता विकसित करता है।

क्रियात्मक पक्ष की परिभाषा . क्रियात्मक पक्ष (Psychomotor Domain) शिक्षा का वह क्षेत्र है जिसमें शारीरिक गतियों, क्रियाओं, कौशलों और शारीरिक–मानसिक समन्वय से जुड़े उद्देश्यों को शामिल किया जाता है।

यह पक्ष विद्यार्थियों को केवल जानने और महसूस करने के बजाय वास्तविक जीवन में करने और अनुप्रयोग करने की दिशा में प्रेरित करता है।

क्रियात्मक पक्ष के स्तर

हालाँकि ब्लूम ने मूल टैक्सनॉमी में इसका विस्तृत वर्गीकरण नहीं किया था, बाद में डेव (Dave 1970), सिम्पसन (Simpson 1972) और हैरोज (Harrow 1972) ने इसे विस्तार दिया। यहाँ सामान्यतः स्वीकृत चरण इस प्रकार हैंः

(i) **अनुकरण**

विद्यार्थी शिक्षक या मॉडल को देखकर किसी कार्य की नकल करता है।

उदाहरणः शिक्षक के बताए अनुसार प्रयोगशाला में यंत्र चलाना, खेल–कूद में कोच की तरह क्रिया करना।

शिक्षण गतिविधि प्रदर्शन विधि, प्रायोगिक कार्य, डेमो।

(ii) **अनुसरण**

विद्यार्थी बिना सहायता के किसी क्रिया को करने लगता है।

उदाहरणः प्रयोगशाला उपकरणों का स्वतंत्र प्रयोग करना, संगीत वाद्य बजाना सीखना।

महत्व आत्मनिर्भरता की शुरुआत।

(iii) **सटीकता**

क्रिया को शुद्धता और सटीकता के साथ करना।

उदाहरणः ड्राइंग बनाना, मशीन चलाना, खेल में तकनीकी कौशल दिखाना।

शिक्षण गतिविधिः अभ्यास, निरंतर पुनरावृत्ति।

(iv) **समन्वय**

विभिन्न क्रियाओं का आपसी समन्वय कर जटिल कार्यों को करना।

उदाहरण: वैज्ञानिक प्रयोग करते समय कई उपकरणों का संयोजन करना, नृत्य की जटिल मुद्राएँ प्रस्तुत करना।

महत्व: यह स्तर रचनात्मक और तकनीकी दक्षता का प्रतीक है।

(v) **स्वाभाविकता**

कौशल विद्यार्थी के व्यक्तित्व का हिस्सा बन जाता है और वह कार्य सहजता से करता है।

उदाहरण: डॉक्टर का शल्यक्रिया करना, पायलट का विमान उड़ाना, क्रिकेटर का शॉट खेलना।

महत्व: विशेषज्ञता और दक्षता का सर्वोच्च स्तर।

शिक्षण–प्रशिक्षण में क्रियात्मक पक्ष का महत्व

1. **व्यावहारिक ज्ञान का विकास:** शिक्षा तभी सार्थक है जब विद्यार्थी वास्तविक जीवन में कार्य कर सकें।
2. **कौशल आधारित शिक्षा:** तकनीकी, व्यावसायिक और व्यावहारिक विषयों में क्रियात्मक पक्ष आवश्यक है।
3. **नवाचार और रचनात्मकता:** कौशल का अभ्यास विद्यार्थी को नवीन प्रयोग और रचनात्मकता की ओर ले जाता है।
4. **जीवनोपयोगी क्षमताएँ:** खेल, कला, हस्तकला, विज्ञान प्रयोग, तकनीकी कार्य विद्यार्थियों को जीवनोपयोगी दक्षता प्रदान करते हैं।
5. **सर्वांगीण विकास:** बौद्धिक और भावात्मक पक्ष के साथ जब क्रियात्मक पक्ष जुड़ता है तभी शिक्षा पूर्ण मानी जाती है।

आधुनिक शिक्षा में क्रियात्मक पक्ष की प्रासंगिकता

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) कौशल–आधारित और अनुभवात्मक शिक्षा पर विशेष बल देती है।
- आज का समाज केवल डिग्री नहीं बल्कि कौशल की अपेक्षा करता है।
- व्यावसायिक शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, सूचना–प्रौद्योगिकी, खेल, कलाकृइन सभी में क्रियात्मक पक्ष अपरिहार्य है।
- डिजिटल युग में प्रोजेक्ट–आधारित शिक्षा, वर्कशॉप, इंटर्नशिप, लैब–आधारित शिक्षा क्रियात्मक पक्ष के विकास का माध्यम हैं।
- क्रियात्मक पक्ष ब्लूम टैक्सनॉमी का वह आयाम है जो शिक्षा को व्यवहारिकता, उपयोगिता और कौशल–आधारित दिशा देता है।
- यह विद्यार्थियों को जानने और महसूस करने के साथ–साथ करने की क्षमता प्रदान करता है।

आज के समय में जब शिक्षा केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित रहने की बजाय कौशल और दक्षताओं पर केंद्रित है, तब क्रियात्मक पक्ष की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

अतः शिक्षा के उद्देश्यों का यह क्रियात्मक पक्ष विद्यार्थियों को न केवल योग्य, बल्कि दक्ष, रचनात्मक और जीवनोपयोगी क्षमताओं से संपन्न नागरिक बनाने में सहायक है।

ब्लूम टैक्सनॉमी का शिक्षण–प्रशिक्षण में महत्व

(i) **उद्देश्यों की स्पष्टता**

ब्लूम टैक्सनॉमी शिक्षकों को यह स्पष्ट करने में मदद करती है कि वे विद्यार्थियों को किस स्तर तक ले जाना चाहते हैं। इससे शिक्षण योजनाएँ अधिक उद्देश्यपूर्ण बनती हैं।

(ii) **शिक्षण विधियों का चयन**

संज्ञानात्मक उद्देश्यों के लिए व्याख्यान, चर्चा, प्रश्नोत्तर उपयुक्त हैं। भावात्मक उद्देश्यों के लिए भूमिका–अभिनय, समूह कार्य और मूल्य–आधारित गतिविधियाँ, जबकि मनोचालित उद्देश्यों के लिए प्रयोगशाला, कार्यशाला और अभ्यास आवश्यक हैं।

(iii) **अधिगम सामग्री का चयन**

टैक्सनॉमी के आधार पर शिक्षक यह तय कर सकता है कि किस प्रकार की शिक्षण सामग्री का प्रयोग किया जाए पुस्तक, चार्ट, मॉडल, प्रयोग, ऑडियो–विजुअल साधन आदि।

(iv) **मूल्यांकन में सुधार**

ब्लूम टैक्सनॉमी के अनुसार परीक्षा प्रश्न तैयार करने से यह सुनिश्चित होता है कि मूल्यांकन केवल रटंत ज्ञान पर आधारित न हो, बल्कि उच्च स्तरीय सोच, रचनात्मकता और समस्या–समाधान क्षमता की भी जाँच करे।

(v) **शिक्षार्थी का समग्र विकास**

संज्ञानात्मक, भावात्मक और मनोचालित तीनों क्षेत्रों को विकसित करके ब्लूम टैक्सनॉमी शिक्षा को समग्र बनाती है। इससे शिक्षार्थी बौद्धिक रूप से सक्षम, मूल्यपरक दृष्टि वाला और व्यावहारिक कौशल सम्पन्न बनता है।

आधुनिक संदर्भ में ब्लूम टैक्सनॉमी की प्रासंगिकता

- आज की शिक्षा प्रणाली तेजी से बदल रही है।
- नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) अनुभवात्मक अधिगम, कौशल विकास और बहु–विषयी दृष्टिकोण पर बल देती है।
- वैश्विक स्तर पर 21वीं सदी की आवश्यकताओं, आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता, सहयोग और संचार को शिक्षा का अंग बनाने की आवश्यकता है।
- डिजिटल युग में केवल जानकारी अर्जित करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि जानकारी को विश्लेषित कर उसका रचनात्मक उपयोग करना अधिक महत्त्वपूर्ण है।
- इन परिस्थितियों में ब्लूम टैक्सनॉमी शिक्षकों और शिक्षाविदों को मार्गदर्शन देती है कि शिक्षा किस दिशा में और किस प्रकार दी जाए।
- आलोचनाएँ और सीमाएँ
- यद्यपि ब्लूम टैक्सनॉमी अत्यंत उपयोगी है, फिर भी इसकी कुछ सीमाएँ हैं:
  - यह अधिकतर संज्ञानात्मक क्षेत्र पर केंद्रित है।
  - स्तरों का कठोर क्रम कभी–कभी व्यवहारिक शिक्षण में लचीलेपन को बाधित करता है।
  - भावात्मक और मनोचालित क्षेत्रों का विकास अपेक्षाकृत कम हुआ है।
  - फिर भी, व्यवहार में इसका प्रयोग शिक्षा को अधिक संगठित और प्रभावी बनाता है।

ब्लूम टैक्सनॉमी केवल शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण मात्र नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी शिक्षण–दृष्टि है जो शिक्षा को समग्र, उद्देश्यपूर्ण और जीवनोपयोगी बनाती है। इसके माध्यम से शिक्षक न केवल ज्ञान का संचार करते हैं, बल्कि विद्यार्थियों में भावनात्मक परिपक्वता और व्यावहारिक कौशल भी विकसित कर सकते हैं।

आज जब शिक्षा प्रणाली कौशल–आधारित और अनुभवात्मक अधिगम की ओर अग्रसर है, ब्लूम टैक्सनॉमी की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है। यह शिक्षक–प्रशिक्षण, पाठ्यचर्या निर्माण, मूल्यांकन और अधिगम सभी को दिशा देने वाला एक सशक्त उपकरण है।

अतः कहा जा सकता है कि ब्लूम टैक्सनॉमी शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने और उसे वास्तविक जीवनोपयोगी बनाने का आधारशिला है।

निष्कर्ष

शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं है, बल्कि व्यक्ति के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करना है। इस दिशा में ब्लूम टैक्सनॉमी शैक्षिक उद्देश्यों का ऐसा वैज्ञानिक ढाँचा प्रस्तुत करती है, जो शिक्षण को केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित न रखकर उसे अनुभवात्मक, मूल्यपरक और कौशल–आधारित बनाती है।

ब्लूम टैक्सनॉमी के अंतर्गत शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण तीन क्षेत्रों में किया गया हैः संज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक। संज्ञानात्मक पक्ष विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमताओं जैसे ज्ञान, समझ, विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन को विकसित करता है। भावात्मक पक्ष विद्यार्थियों के दृष्टिकोण, मूल्य, रुचि, संवेदनशीलता और नैतिकता को आकार देता है। वहीं क्रियात्मक पक्ष व्यावहारिक कौशल, शारीरिक दक्षताओं और जीवनोपयोगी क्षमताओं के विकास पर केंद्रित है। इन तीनों पक्षों का संतुलित विकास ही शिक्षा को पूर्णता प्रदान करता है।

शिक्षण–प्रशिक्षण की दृष्टि से ब्लूम टैक्सनॉमी का महत्व अनेक स्तरों पर है। यह शिक्षक को शिक्षण उद्देश्यों को स्पष्ट करने, क्रमबद्ध करने और उन्हें छात्रों की आवश्यकताओं एवं स्तर के अनुरूप निर्धारित करने में सहायक बनाती है। यह न केवल शिक्षण योजनाओं के निर्माण में मार्गदर्शन देती है, बल्कि शिक्षण विधियों और गतिविधियों के चयन को भी उद्देश्यपूर्ण बनाती है। इसके अतिरिक्त मूल्यांकन की प्रक्रिया को भी यह अधिक वैज्ञानिक और वस्तुनिष्ठ बनाती है, क्योंकि परीक्षा प्रश्नों का निर्माण विभिन्न स्तरों को ध्यान में रखकर किया जा सकता है।

वर्तमान शिक्षा परिदृश्य में, जब नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) कौशल–आधारित, बहुआयामी और अनुभवात्मक अधिगम पर बल देती है, तब ब्लूम टैक्सनॉमी और भी अधिक प्रासंगिक हो जाती है। यह विद्यार्थियों में रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन, समस्या–समाधान और जीवनोपयोगी कौशलों का विकास कर उन्हें भविष्य की चुनौतियों का सामना करने योग्य बनाती है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि ब्लूम टैक्सनॉमी शैक्षिक उद्देश्यों का केवल वर्गीकरण मात्र नहीं है, बल्कि यह एक व्यावहारिक अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि ब्लूम टैक्सनॉमी शैक्षिक उद्देश्यों का केवल वर्गीकरण मात्र नहीं है, बल्कि यह एक व्यावहारिक शैक्षिक उपकरण है जो शिक्षा को ज्ञान, मूल्य और कौशल तीनों आयामों में संतुलित बनाता है। यदि शिक्षक इसे शिक्षण–प्रशिक्षण में प्रभावी ढंग से अपनाएँ तो शिक्षा केवल परीक्षा उत्तीर्ण करने का साधन न रहकर विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास और समाज के नैतिक उत्थान का आधार बन सकती है।

संदर्भ सूची

1. सिंह, हरिशंकर (2023) *शिक्षण एवं अधिगम,* आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, पृ. 54 –58।
2. मंगल,एस. के. (2007) *शिक्षण तकनीकी,* आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली, पृ. 156 –159।
3. वालिया, जे.एस. (2014) *शिक्षा तकनीकी,* अहम पाल पब्लिशर्स, जालंधर, पृ. 294 – 297।
4. सिंह, रामपाल (2024) *नागरिक शास्त्र शिक्षण,* आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, पृ.. 27 – 39।
5. अस्थाना, विपिन (2018–19) *अधिगम के लिए आंकलन,* अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पृ.. 88 – 95।
6. सक्सेना, एन. आर. स्वरूप (2010) *शिक्षण की तकनीकी,* आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, पृ. 340–358।
7. नेगी, जे.एस. (2010) *भौतिक विज्ञान शिक्षण,* अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पृ. 45 – 48।
8. रावत, एम.एस. (2017–18) *गणित का शिक्षणशास्त्र,* अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा, पृ. 52 – 60।
9. मदान, पूनम (2020) *पेडागॉजी ऑफ इंग्लिश,* आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, पृ. 38 – 40।
10. त्यागी, गुरुसरण दास (2017) *अर्थशास्त्र शिक्षण,* श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृ. 25 28।
11. https://www. Simplypsychology.org, Accessed on 06/06/2025.

****